

Padma Shri



SHRI S. DAMODARAN

Shri S. Damodaran, totally devoted his lifetime since 1985 only to promote household toilet facilities to the rural, urban poor, people living in the coastal regions, tribal areas and in town panchayats by closely working with Central Government, State Government, international donor organizations and with CSR initiatives. He has been involved in all the Government total sanitation programs from 1980s to Swachh Bharat Mission Program - 2014 till date.

2. Born on 12th March 1962, Shri Damodaran founded Gramalaya and worked in the water and sanitation sector for more than three and half decades and created role model projects in South India. Under his guidance, more than six lakhs household toilets were promoted through the various Government schemes like CRSP, TSC, NBA, LCS (Low-cost Sanitation cum Scavengers Rehabilitation Program) and SBM Gramin which were sustainable models and working very well till today. He formulated three pronged strategy including health empowerment through toilets, safe drinking water and hygiene education and economic empowerment. His work through sustainable sanitation initiatives resulted in women and adolescent girls led a dignified life with privacy, safety and security.

3. The concept of Open defecation free village was first experimented in Thandavampatti village by Gramalaya in Tiruchirappalli District as First Open Defecation Free village in India where a resolution was passed at the Grama Sabha meeting on 26.1.2003 with 100 percent toilet coverage in all the households in the village including a ban on open defecation. Following this village, he was instrumental in declaring more than 300 villages in the rural areas and 187 slums in Tiruchirappalli City Corporation as ODF including India's first slum in Kalmandhai in 2002. In 2006, he developed a Centre for Toilet Technology and Training at the Gramalaya Training Centre.

4. Shri Damodaran introduced the concept of Self Help Group women managed community pay and use toilets in 2000 which is still working successfully in Tiruchirappalli City Corporation on a self-sustainable basis. This was acknowledged in the Five Year plan document 2012 to 2017 as Faster, More Inclusive and Sustainable Growth by Government of India as one of role model projects in India. He has designed the SMART Toilet model with bath attached wherein more than 60,000 SMART Toilets were built in South India under his leadership. In the National Key Resource Centre of Gramalaya approved by Ministry of Jal Shakthi, Government of India, a number of training and orientation programs on water and sanitation technologies have been organized by him including three national-level workshops like Menstrual Hygiene Management India Summit at New Delhi.

5. Shri Damodaran designed and developed the reusable menstrual cloth pads six years ago which has reached the adolescent girls studying in Schools and women in the rural areas. So far more than 5,91,000 reusable cloth pads for menstrual hygiene were promoted by him that has saved our environment, land and our water sources. Through household toilet promotion and hygiene education, he has empowered many women and adolescent girls on economical, social and health aspects in India.

पद्म श्री



श्री एस. दामोदरन

श्री एस. दामोदरन ने 1985 से अपना जीवन, ग्रामीण, शहरी गरीबों, तटीय क्षेत्रों, आदिवासी क्षेत्रों और नगर पंचायतों में रहने वाले लोगों के लिए केंद्र सरकार, राज्य सरकार, अंतरराष्ट्रीय दानदाता संगठनों और सीएसआर पहलों के साथ जुड़कर घरेलू शौचालय सुविधाओं को बढ़ावा देने के प्रति समर्पित कर दिया। उन्होंने 1980 के दशक से लेकर 2014 के स्वच्छ भारत मिशन कार्यक्रम सहित अब तक, सभी सरकारी समग्र स्वच्छता कार्यक्रमों में भागीदारी की है।

2. 12 मार्च, 1962 को जन्मे, श्री दामोदरन ने ग्रामालय की स्थापना की और साढ़े तीन दशक से अधिक समय तक जल और स्वच्छता क्षेत्र में कार्य किया है तथा उन्होंने दक्षिण भारत में कई आदर्श परियोजनाओं का सृजन किया है। उनके मार्गदर्शन में, सीआरएसपी, टीएससी, एनबीए, एलसीएस (लो कॉस्ट सेनिटेशन कम स्केवेंजर्स रिहैबिलिटेशन प्रोग्राम) और एसबीएम ग्रामीण जैसी विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से छह लाख से अधिक स्थायी मॉडल के घरेलू शौचालयों का निर्माण कराया गया जो आज भी भली-भांति उपयोग में लाये जा रहे हैं। उन्होंने शौचालय, सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता शिक्षा तथा आर्थिक सशक्तीकरण के माध्यम से स्वास्थ्य सशक्तीकरण सहित तीन आयामी रणनीति तैयार की। स्थायी स्वच्छता पहलों के माध्यम से उनके कार्य के परिणामस्वरूप महिलाओं और किशोरियों को निजता, सुरक्षा और संरक्षा के साथ एक सम्मानजनक जीवन जीने में मदद मिली।

3. खुले में शौच से मुक्त गाँव की अवधारणा का प्रयोग सर्वप्रथम ग्रामालय द्वारा तिरुचिरापल्ली जिले के थंडावमपट्टी गाँव में किया गया था, जहाँ 26.01.2003 को ग्राम सभा की बैठक में गाँव में खुले में शौच पर प्रतिबंध सहित गाँव के सभी घरों में 100 प्रतिशत शौचालय कवरेज के साथ भारत में पहले खुले में शौच से मुक्त गाँव के लिए प्रस्ताव पारित किया गया था। इस गाँव के बाद, उन्होंने वर्ष 2002 में कलमंघई में भारत की पहली झुग्गी बस्ती सहित ग्रामीण क्षेत्रों में 300 से अधिक ग्रामीण क्षेत्रों और तिरुचिरापल्ली सिटी कॉरपोरेशन में 187 मलिन बस्तियों को खुले में शौचमुक्त (ओडीएफ) के रूप में घोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्ष 2006 में, उन्होंने ग्रामालय प्रशिक्षण केंद्र में शौचालय प्रौद्योगिकी और प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया।

4. श्री दामोदरन ने वर्ष 2000 में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा प्रबंधित 'कम्यूनिटी पे एंड यूज़' शौचालय की अवधारणा की शुरुआत की, जो अभी भी तिरुचिरापल्ली नगर निगम में आत्मनिर्भर रूप में सफलतापूर्वक चल रहा है। इसे भारत सरकार द्वारा 2012 से 2017 के पंचवर्षीय योजना दस्तावेज में भारत में आदर्श परियोजना के रूप में अधिक तीव्र, अधिक समावेशी और सतत विकास परियोजना के रूप में रेखांकित किया गया था। उन्होंने स्नानघर के साथ स्मार्ट शौचालय मॉडल को डिजाइन किया है तथा उनके नेतृत्व में दक्षिण भारत में 60,000 से अधिक स्मार्ट शौचालय निर्मित किए गए। जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अनुमोदित ग्रामालय के राष्ट्रीय महत्व के संसाधन केंद्र, नई दिल्ली में उन्होंने मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन भारत शिखरवार्ता जैसी तीन राष्ट्रीय स्तर की कार्यशालाओं सहित जल और स्वच्छता प्रौद्योगिकियों पर कई अन्य प्रशिक्षण और जानकारी कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

5. श्री दामोदरन ने छह साल पहले मासिक धर्म के बार-बार प्रयोग किए जाने वाले कपड़े के पैड का डिजाइन और विकास किया जो ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों में पढ़ने वाली किशोर लड़कियों और महिलाओं तक पहुंच गया है। मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता के लिए उन्होंने अब तक 5,91,000 से अधिक, बार-बार प्रयोग किए जाने वाले कपड़े के पैडों को बढ़ावा दिया है जिसके परिणामस्वरूप हमारे पर्यावरण, भूमि और जल स्रोतों को संरक्षित किया जा सका है। घरेलू शौचालय को बढ़ावा देकर और स्वच्छता शिक्षा के माध्यम से, उन्होंने भारत में अत्यधिक महिलाओं और किशोर लड़कियों को आर्थिक, सामाजिक और स्वास्थ्य के मामले में सशक्त बनाया है।